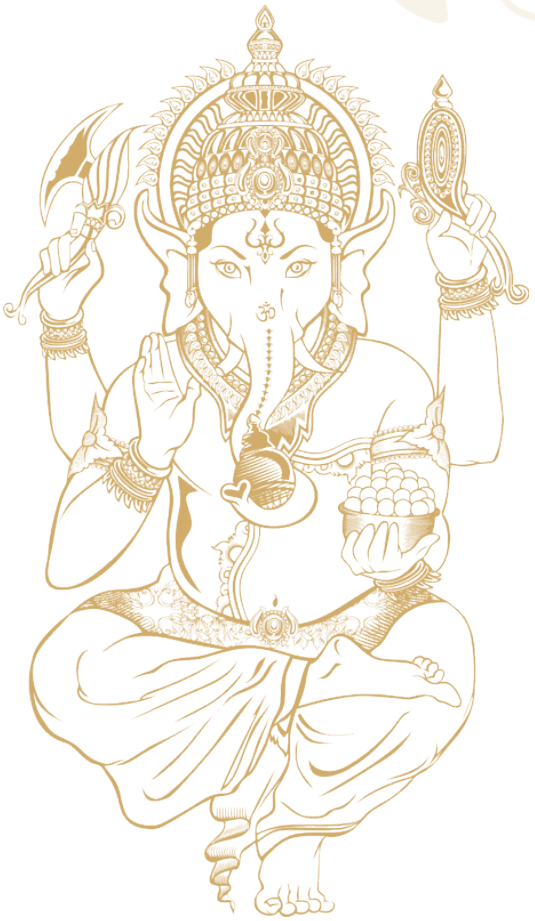

Ms

09 Aug 2025

11:14 AM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119043601**

तिथि 09/08/2025 **समय** 11:14:00 **वार** शनिवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:57
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	: 08:21:08 घं	गण	: देव
वेलान्तर	: 00:05:32 घं	योनि	: वानर
सूर्योदय	: 05:33:01 घं	नाड़ी	: अन्त्य
सूर्यास्त	: 18:46:53 घं	वर्ण	: वैश्य
चैत्रादि संवत	: 2082	वश्य	: जलचर
शक संवत	: 1947	वर्ग	: मार्जार
मास	: श्रावण	युँजा	: अन्त्य
पक्ष	: शुक्ल	हंसक	: भूमि
तिथि	: 15	जन्म नामाक्षर	: खो-खोमनी
नक्षत्र	: श्रवण	पाया(रा.-न.)	: लौह-ताम्र
योग	: सौभाग्य	होरा	: बुध
करण	: बव	चौघड़िया	: उद्वेग

विंशोत्तरी		योगिनी	
चन्द्र 1वर्ष 5मा 7दि		मंगला 0वर्ष 1मा 22दि	
चन्द्र		मंगला	
	09/08/2025		09/08/2025
	16/01/2027		30/09/2025
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	09/08/2025		09/08/2025
शुक्र	17/07/2026	संकटा	30/09/2025
सूर्य	16/01/2027		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			07:01:23	तुला	स्वाति	1	राहु	राहु	---	0:00			
सूर्य			22:41:08	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	चंद्र	मित्र राशि	1.73	आत्मा	पितृ	साधक
चंद्र			21:25:03	मक	श्रवण	4	चंद्र	शुक्र	सम राशि	1.36	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			07:11:23	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	केतु	शत्रु राशि	0.91	ज्ञाति	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध	व		10:16:26	कर्क	पुष्य	3	शनि	शुक्र	शत्रु राशि	1.20	पुत्र	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			19:13:47	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	मंगल	शत्रु राशि	1.19	भ्रातृ	धन	विपत
शुक्र			16:19:41	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि	1.19	मातृ	कलत्र	विपत
शनि	व		07:07:00	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	1.09	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		24:20:43	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		24:20:43	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

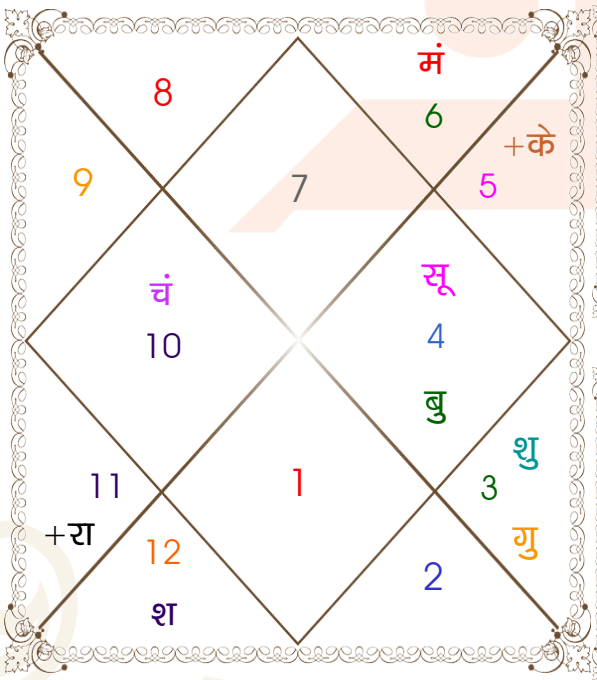

चन्द्र कुंडली

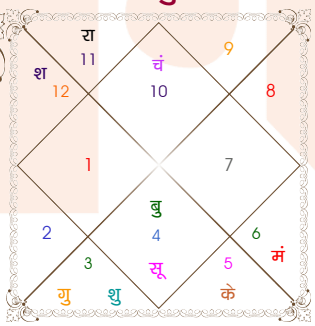

नवमांश कुंडली

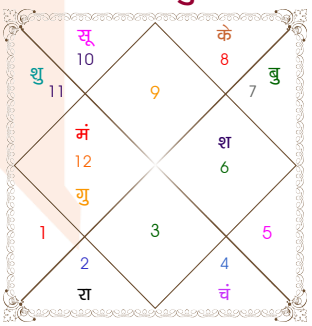

सर्वाष्टकवर्ग

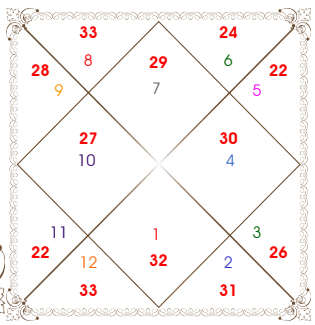

दशमांश कुंडली

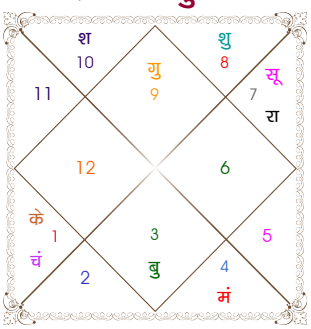

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

नक्षत्रफल

आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि वानर, गण देव, वर्ण वैश्य, वर्ग मार्जार तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "खो" अक्षर से होगा।

विभिन्न शास्त्रों के ज्ञानार्जन में आप रूचिशील रहेंगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में सफल होंगी। आपका सामाजिक क्षेत्र विस्तृत रहेगा। अतः आपके मित्रों की संख्या भी अधिक रहेगी तथा इनका आपको जीवन में सुख प्राप्त होता रहेगा। भद्रजनों एवं विद्वान लोगों के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा एवं इनको आप हार्दिक आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगी। आप शत्रुवर्ग को नष्ट करने में प्रायः सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धार्मिक ग्रन्थों तथा पुराणों के श्रवण में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा अपनी इस प्रवृति के पालन के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

देवता तथा ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में अगाध श्रद्धा तथा प्रेम का भाव विद्य मान रहेगा तथा आप इनके प्रति इस भावना का प्रदर्शन करती रहेंगी। धन सम्पति से आप सुसम्पन्न होकर धनाढ्य कहलाएंगी तथा आनन्दपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला भी होंगी तथा अपने परिश्रम तथा योग्यता के बल पर किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त कर सकेंगी। इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होगी। धर्म के प्रति भी आपकी निष्ठा रहेगी तथा समस्त धार्मिक कृत्यों का आप प्रयत्नपूर्वक अनुपालन करेंगी।

श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।
जातक परिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में आप एक गणमान्य महिला होंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप विभिन्न शास्त्रों में भी पारंगत होंगी अतः एक विदुषी के रूप में भी समाज में आपकी ख्याति तथा प्रतिष्ठा रहेगी। आपके मन में दया का भाव स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहेगा। अतः समाज में सभी वर्गो के साथ आप सेवा सहयोग करने के लिए तत्पर

रहेंगी। साथ ही दीन दुःखियों के प्रति भी आपका विशेष सेवा भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आप के पति एक धनाढ्य गुणवान तथा बुद्धिमान पुरूष भी होंगे। अतः आपका सांसारिक जीवन समस्त सुखसंसाधनों से युक्त होकर सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

समाज में अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनके उपकार को स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगी। आपके इस कृतज्ञता के भाव को देखकर अन्य लोग भी आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप की शारीरिक सुन्दरता भी दर्शनीय रहेगी तथा अन्य लोगों का इसमें आकर्षण बना रहेगा। आपकी सन्ततियां अधिक संख्या में उत्पन्न होंगी तथा जीवन में सर्वप्रकार के सद्गुणों से सुशोभित होकर आप आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।
श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक प्रायः रोगी धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में दुःख प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुडंली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। आप जलोत्पन्न पदार्थो से नित्य लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। आप धनवान महिला होंगी तथा चल अचल सम्पतियों की स्वामिनी होंगी। विविध प्रकार के नवीन परिधानों से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में वाहन सुख को भी प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपको उचित सहायता तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। माता की आप प्रिय रहेंगी तथा आप भी उनको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगी। जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में सदैव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त जलक्रीडा में भी आपकी हार्दिक रूचि रहेगी।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपके शारीरिक कद की ऊंचाई अधिक होगी तथा मस्तक भी विस्तृत होगा। आपके नेत्र अत्यन्त ही सुन्दरता लिए होंगे तथा शारीरिक सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा। संगीत के प्रति आप प्रारम्भ से ही रूचि शील रहेंगी तथा इसका गहन ज्ञान प्राप्त करेंगी। शीत से आप को व्याकुलता की अनुभूति होगी तथा इसको सहन करने में आप

प्रायः असमर्थ ही रहेगी। सत्य का आप हमेशा नियमपूर्वक अनुपालन करने के लिए यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगी। आप अन्य लोगों को दिखाने के लिए धर्म में रूचि रखेंगी तथा अत्यन्त ही श्रद्धापूर्वक इसका आचरण करने का नाटक करेंगी। समाज में सभी वर्गो के मध्य आप लोकप्रिय तथा सम्माननीया रहेंगी एवं सभी लोग आपको हादिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी फैली रहेगी। आप में क्रोध का भाव भी अल्प मात्रा में ही रहेगा। आप किसी के प्रति अपने मन में घृणा तथा वैमनस्य का भाव नहीं रखेंगी अपितु प्रेम तथा स्नेह का ही अधिक भाव रहेगा। अतः इससें अन्य जन आपसे असन्तुष्ट से रहेंगे। आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले लोगों के प्रति विशेष आकर्षित रहेंगी तथा उन्हीं से मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध स्थापित भी करेंगी। लेखन कार्य में भी रूचि होने के कारण आप काव्य सृजन के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकेंगी। पूर्ण उत्साह की भावना का आप में प्रायः अभाव ही रहेगा तथा लोलुपता की प्रवृति से युक्त होने के कारण आप कभी कभी अकारण समस्याओं का भी सामना करेंगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने पति तथा पुत्र सहित अपना अधिकांश समय इनके पालन पोषण में ही व्यतीत करेंगी। आपकी कमर भी पतली होगी। आप शीघ्र ही अन्य व्यक्तियों की बातों से सहमत हो जाएंगी तथा उनके कहे अनुसार ही आचरण करने को भी उद्यत रहेंगी। आप में आलस का भाव भी रहेगा अतः आपके अधिकाँश कार्य शनैः शनैः ही सम्पन्न होंगे परन्तु आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी अतः आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः ही अल्प परिश्रम द्वारा भाग्यबल से सम्पन्न हो जाएंगे। आपकी घूमने फिरने तथा यात्रा करने में भी रूचि रहेगी एवं अपने अधिकाँश समय को इसी में व्यतीत करेंगी। शारीरिक बल आप में मध्यम ही रहेगा परन्तु आप शौर्य गुणों से युक्त होकर एक साहसी महिला होंगी अतः अगम्य स्थानों एवं कठिन कार्यों को करने की ओर भी आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आपको परिवार में सामान्य रूप से ही आदर की प्राप्ति होगी परन्तु कुल एवं परिवार की रीति आगे बढाने तथा मर्यादा पालन करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगी तथा इसमें आपका विशेष सहयोग रहेगा। अपने पति को वश में करने में आप पूर्ण सफल रहेंगी तथा वे समस्त सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे

तथा इस संबंध में स्वतंत्र निर्णय लेने में सर्वथा असमर्थ रहेंगे। सज्जन एवं भद्रपुरूषों द्वारा आपकी नित्य प्रशंसा की जाएगी तथा आप भी इनके पूर्ण मान सम्मान प्रदान करेंगे। माता के प्रति आपके मन में विशेष आदर एवं सम्मान का भाव रहेगा। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में इससे सुखानुभूति प्राप्त करेंगी। भाइयों के प्रति आपका पूर्ण स्नेह रहेगा तथा इनका आप समय समय पर पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। जीवन में आप धन सम्पति से सुसम्पन्न रहकर एक धनाढ्य महिला कहलाएंगी। आप में त्याग की भावना भी रहेगी तथा अवसरानुकूल परिवार या समाज में अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करती रहेंगी। आपका परिवार भी विशाल रहेगा। सुख के प्रति आप विशेष चिन्तित रहेंगी एवं दैनिक सुख संसाधनो की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी की धन सम्पति को प्राप्त करेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक उसका उपभोग भी करेंगी। समाज के सभी वर्गो की भलाई के लिए भी आप चिन्तित रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी समस्याओं के समाधान के लिए अपना तन मन धन से सहयोग भी प्रदान करेंगी। इसके साथ ही सलाह देने या मंत्रणा आदि के कार्यों में भी आप निपुण रहेंगी तथा अन्य लोग आपकी इस प्रवृति से समय समय पर लाभान्वित भी होते रहेंगे। भाई बन्धुओं का आप पूर्ण रूप से पालन करेंगे तथा वे भी आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आप शौर्य गुणों से सम्पन्न रहेंगी तथा साहस एवं निर्भयता पूर्ण अपना जीवन यापन करेंगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीतशास्त्र के क्षेत्र में आप निपुणता तथा ख्याति अर्जित करेंगी। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता आपके सौन्दर्य की अभिवृद्धि में सदैव सहायक सिद्ध होगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

आप का जन्म देवगण में हुआ हैं। अतः आपकी वाणी मधुर एवं श्रेष्ठता से युक्त रहेगी। आप की बुद्धि सरल होगी तथा आप अपने विचारों को अन्य जनों के समक्ष सुगमता

पूर्वक प्रकट करेंगी। आप को थोड़ी मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही प्रियकर लगेगा। अन्य लोगों के गुणों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा अच्छे बुरे की पहचान भी रहेगी। आप स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा वणित सद्गुणों से सुशोभित रहेंगी। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार की धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुख पूर्वक इसका जीवन में उपभोग करेंगी।

आपकी शारीरिक सुन्दरता भी दर्शनीय रहेगी तथा दान शीलता का भाव प्रारम्भ से ही आपके हृदय में रहेगा। अतः दीन दुःखियों तथा जरूरतमन्दों को आप नित्य दान देकर अपनी इस प्रवृति का पालन करेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा सादगीपूर्ण ढंग से जीवन यापन करेंगी अनावश्यक भौतिकता की आप यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में एक विदुषी के रूप में भी आप आदरणीया तथा प्रसिद्ध रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप में चंचलता की प्रबलता रहेगी तथा आप के अधिकाँश कार्य चपलता से ही सम्पन्न होंगे। आप मिष्ठान प्रिय होंगी तथा मीठे पदार्थो के भक्षण में आपकी विशेष रूचि रहेगी। धन प्राप्त करने के लिए आप अत्यन्त ही लालयित रहेंगी तथा इसे प्राप्त करते समय भी आतुरता का प्रदर्शन करेंगी। आप में काम भावना की अधिकता भी रहेगी तथा आपकी सभी सन्ततियां बुद्धिमान एवं गुणवान होंगी। अन्य जनों से आपका कभी कभी परस्पर कलह या विवाद भी उत्पन्न होता रहेगा। साथ ही शौर्य गुणों से सुसम्पन्न रहकर आप साहस तथा निर्भयता से जीवन व्यतीत करेंगी।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका

आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा नहीं चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के भी नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, लोहा,

पंचधातु, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे अशुभ फलों में कमी होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा आपको सर्वत्र लाभ तथा सफलता भी मिलेंगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।